



Date – 3 May 2022

ब्रह्मोस: जहाज रोधी संस्करण



- हाल ही में, भारतीय नौसेना और अंडमान और निकोबार कमान द्वारा संयुक्त रूप से ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल के एक जहाज-रोधी संस्करण का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया है।
- अंडमान और निकोबार कमान भारतीय सशस्त्र बलों की एकमात्र त्रि-सेवा कमान है।

ब्रह्मोस के बारे में:

- ब्रह्मोस रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन और रूस के एनपीओएम के बीच एक संयुक्त उद्यम है।
- इसका नाम भारत की ब्रह्मपुत्र नदी और रूस की मोस्कवा नदी के नाम पर रखा गया है।
- यह दो चरणों वाली (पहले चरण में ठोस प्रणोदक इंजन और दूसरे में तरल रैमजेट) मिसाइल है।
- यह एक मल्टीप्लेटफॉर्म मिसाइल है जिसे जमीन, हवा और समुद्री मिसाइल क्षमता से सटीकता के साथ लॉन्च किया जा सकता है जो खराब मौसम के बावजूद दिन और रात दोनों समय संचालित हो सकती है।
- यह "आग और भूल जाओ" के सिद्धांत पर काम करता है, यानी लॉन्च के बाद इसे मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं होती है।
- ब्रह्मोस सबसे तेज क्रूज मिसाइलों में से एक है जो वर्तमान में मच 8 (ध्वनि की गति से लगभग 3 गुना) की गति से सक्रिय रूप से तैनात है।
- इससे पहले, भारतीय वायु सेना ने सुखोई फाइटर जेट से ब्रह्मोस मिसाइल का सफल परीक्षण किया था।

- हाल ही में भारतीय नौसेना ने भी हिंद महासागर में ब्रह्मोस मिसाइल के एक उन्नत संस्करण का सफलतापूर्वक परीक्षण किया।
- जून 2016 में भारत के मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर) क्लब में शामिल होने के बाद, बाद के चरण में मिसाइल की सीमा 450 किमी तक बढ़ा दी गई और योजना 600 किमी तक विस्तारित हो गई।

भारत द्वारा रूस से खरीदे गए रक्षा उपकरण:

- **पनडुब्बियां:** P75-I परियोजना के तहत छह वायु स्वतंत्र प्रणोदन-एआईपी-संचालित पारंपरिक पनडुब्बियां।
- भारत के लिए दो परमाणु बैलिस्टिक पनडुब्बियों को पट्टे पर देने के लिए बातचीत चल रही है।
- **युद्धपोत और निर्देशित-मिसाइल विध्वंसक:** नौसेना के 10 निर्देशित-मिसाइल विध्वंसक में से चार रूसी काशीन वर्ग के हैं और इसके 17 युद्धपोतों में से छह रूसी तलवार वर्ग के हैं।
- **विमान वाहक:** आईएनएस विक्रमादित्य, भारत की सेवा में एकमात्र विमानवाहक पोत, सोवियत निर्मित कीव श्रेणी का जहाज है जिसे 2013 में भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था।
- **लड़ाकू विमान:** रूस भी भारत को लड़ाकू जेट के मुख्य निर्यातकों में से एक रहा है, जिसमें सैकड़ों सुखोई और मिग जेट शामिल हैं।
- सेवा में सभी छह एयर टैंक रूसी निर्मित IL-78s हैं।
- **टैंक:** भारतीय सेना का प्रमुख युद्धक टैंक बल मुख्य रूप से रूसी T-72M1 (66%) और T-90S (30%) से बना है।
- **मिसाइल रक्षा प्रणाली:** एस-400 मिसाइल रोधी प्रणाली।

[Swadeep Kumar](#)

इंडोनेशिया ने ताड़ के तेल के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया



- हाल ही में इंडोनेशिया, जो दुनिया का सबसे बड़ा पाम तेल उत्पादक, निर्यातक और उपभोक्ता देश है, ने घोषणा की है कि वह खाना पकाने के तेल की घरेलू कमी और कमोडिटी और उसके उत्पादों के लिए इसकी बढ़ती कीमतों को कम करेगा और कच्चे माल के सभी निर्यात पर प्रतिबंध लगाएगा।
- भारत अपनी वार्षिक पाम तेल आवश्यकता का आधा यानी 3 मिलियन टन इंडोनेशिया से आयात करता है। इस प्रकार, इंडोनेशिया द्वारा लगाया गया निर्यात प्रतिबंध भारत के हितों को प्रभावित करेगा।

ताड़ का तेल और उसके उपयोग:

- ताड़ का तेल एक खाद्य वनस्पति तेल है जो पाम ऑयल के फल के मेसोकार्प (लाल गूदे) से प्राप्त होता है।

- इसका उपयोग खाना पकाने, सौंदर्य प्रसाधन, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, केक, चॉकलेट, स्प्रेड, साबुन, शैम्पू और सफाई उत्पादों से लेकर जैव ईंधन तक हर चीज में किया जाता है।
- बायोडीजल बनाने के लिए कच्चे पाम तेल के उपयोग को 'ग्रीन डीजल' कहा गया है।
- इंडोनेशिया और मलेशिया मिलकर वैश्विक ताड़ के तेल का लगभग 90% उत्पादन करते हैं, जिसमें इंडोनेशिया का भी एक बड़ा हिस्सा है जिसने वर्ष 2021 में 45 मिलियन टन पाम तेल का उत्पादन किया।
- ताड़ का तेल उद्योग अपने निरंतर उत्पादन के कारण वनों की कटाई में वृद्धि के साथ-साथ शोषणकारी श्रम विधियों के कारण औपनिवेशिक युग की स्थितियों के कारण आलोचनाओं के घेरे में आ गया है।
- हालांकि पाम तेल को भी पसंद किया जाता है क्योंकि यह सस्ता है, सोयाबीन जैसे कुछ अन्य वनस्पति तेल संयंत्रों की तुलना में पाम तेल का प्रति हेक्टेयर अधिक उत्पादन होता है।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए पाम तेल का महत्व:

- यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर (यूएसडीए) के अनुसार, 2020 में ताड़ के तेल का वैश्विक उत्पादन 73 मिलियन टन (एमटी) से अधिक होने के साथ, यह दुनिया में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला वनस्पति तेल है।
- चालू वित्त वर्ष 2022-23 में इसका उत्पादन 77 मीट्रिक टन होने का अनुमान है।
- रॉयटर्स के अनुसार, चार सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले खाद्य तेलों (ताड़, सोयाबीन, रेपसीड (कैनोला) और सूरजमुखी तेल) की वैश्विक आपूर्ति में ताड़ के तेल की हिस्सेदारी 40% है।
- विश्व स्तर पर 60% पाम तेल की आपूर्ति इंडोनेशिया द्वारा की जाती है।

खाद्य तेलों की कीमतों में तेजी के कारण:

- भारत पाम तेल का सबसे बड़ा आयातक है। वैकल्पिक वनस्पति तेलों की आपूर्ति कम होने के कारण मांग बढ़ने से इस साल पाम तेल की कीमतों में तेजी आई है।
- सोयाबीन, जो कि तेल का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, के भी इस वर्ष प्रभावित होने की संभावना है क्योंकि इसके प्रमुख उत्पादक अर्जेंटीना में सोयाबीन उत्पादन के लिए मौसम अनुकूल नहीं है।
- कैनोला तेल उत्पादन पिछले साल कनाडा में सूखे से प्रभावित हुआ था, और सूरजमुखी तेल की आपूर्ति, जो रूस और यूक्रेन द्वारा उत्पादित 80-90% है, चल रहे संघर्ष से बुरी तरह प्रभावित हुई है।
- महामारी से प्रेरित श्रम की कमी और महामारी और यूक्रेन संकट से जुड़ी वैश्विक खाद्य मुद्रास्फीति के कारण पिछले साल के अंत से वैश्विक खाद्य तेल की कीमतों में तेजी से वृद्धि हुई है।

भारत पर प्रभाव:

- भारत ताड़ के तेल का सबसे बड़ा आयातक है, जो इसके वनस्पति तेल की खपत का 40% हिस्सा है।
- भारत अपनी वार्षिक आवश्यकता का आधा (3 मीट्रिक टन) पाम तेल इंडोनेशिया से आयात करता है।
- इससे उन लोगों की संख्या में वृद्धि होगी जो पहले से ही रिकॉर्ड-उच्च थोक मुद्रास्फीति से जूझ रहे हैं।
- यह महत्वपूर्ण है कि पिछले साल केंद्र ने भारत के घरेलू पाम तेल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए खाद्य तेल पर राष्ट्रीय मिशन – पाम तेल शुरू किया था।

Zero Defect Zero Effect: MSME



- सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय ने MSME सस्टेनेबल (ZED- जीरो डिफेक्ट जीरो इफेक्ट) प्रमाणन योजना शुरू की है।

योजना के बारे में:

- यह योजना एमएसएमई को ZED विधियों और ZED प्रमाणन को अपनाने के लिए सक्षम और सुविधा प्रदान करके MSME चैंपियन बनने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करती है।
- ZED प्रतिज्ञा लेने और पंजीकरण करने के बाद MSME सस्टेनेबल (ZED) प्रमाणन तीन स्तरों में प्राप्त किया जा सकता है:
 - प्रमाणन स्तर 1: कांस्य
 - प्रमाणन स्तर 2: सिल्वर
 - प्रमाणन स्तर 3: सोना
- ZED शपथ लेने के बाद एमएसएमई किसी भी प्रमाणन स्तर के लिए आवेदन कर सकता है यदि उसे लगता है कि यह प्रत्येक स्तर में आवश्यक शर्तों को पूरा करता है।
- ZED प्रतिज्ञा लेने का अर्थ है कि MSMEs को शून्य प्रभाव, शून्य दोष के मूल्यों का पालन करने और ZED के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए "पूर्व-प्रतिबद्धता" लेनी होगी।

सब्सिडी:

- योजना के तहत, एमएसएमई को निम्नलिखित संरचना के अनुसार ZED प्रमाणीकरण की लागत पर सब्सिडी मिलेगी:
 - सूक्ष्म उद्यम: 80%
 - लघु उद्यम: 60%
 - मध्यम उद्यम: 50%
- शून्य दोष शून्य प्रभाव समाधान की ओर बढ़ने में मदद करने के लिए ZED प्रमाणन के तहत MSMEs को हैंडहोल्डिंग और परामर्श सहायता के लिए 5 लाख रुपये (प्रति MSME) प्रदान किए जाएंगे।
- MSMEs ZED प्रमाणन के लिए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों, वित्तीय संस्थानों आदि द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न अन्य प्रोत्साहनों का भी लाभ उठा सकते हैं और MSMEs कवच (COVID-19 मदद) पहल के तहत मुफ्त ZED प्रमाणन के लिए भी आवेदन कर सकते हैं।

योजना के घटक:

- उद्योग जागरूकता कार्यक्रम/कार्यशाला।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- मूल्यांकन और प्रमाणन।
- हाथ पकड़ना।
- लाभ/प्रोत्साहन।

- जनसंपर्क अभियान, विज्ञापन और ब्रांड प्रचार।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म।

संभावित लाभ:

- ZED प्रमाणन की प्रक्रिया के माध्यम से, MSME काफी हद तक अपव्यय को कम करके अपनी उत्पादकता बढ़ा सकते हैं और प्राकृतिक संसाधनों का इष्टतम उपयोग कर सकते हैं और पर्यावरण जागरूकता बढ़ाकर ऊर्जा की बचत करके अपने बाजारों का विस्तार कर सकते हैं।

जेड(ZED) योजना:

- सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा वर्ष 2016 में शुरू की गई योजना एक एकीकृत और व्यापक प्रमाणन प्रणाली है।
- यह योजना उत्पादों और प्रक्रियाओं दोनों में उत्पादकता, गुणवत्ता, प्रदूषण शमन, ऊर्जा दक्षता, वित्तीय स्थिति, मानव संसाधन और डिजाइन और बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) सहित तकनीकी कार्यों के लिए जिम्मेदार है।
- इसका मिशन जीरो डिफेक्ट जीरो इफेक्ट के सिद्धांत के आधार पर भारत में 'जेड' संस्कृति को विकसित और कार्यान्वित करना है।

Zero Defect:

- शून्य दोष अवधारणा एक ग्राहक केंद्रित अवधारणा है।
- शून्य गैर-अनुरूपता या गैर-अनुपालन।

Zero Effect:

- शून्य वायु प्रदूषण, तरल निर्वहन, ठोस अपशिष्ट।
- प्राकृतिक संसाधनों का शून्य अपव्यय।

योजना का उद्देश्य:

- एमएसएमई क्षेत्र में शून्य दोष पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना।
- गुणवत्तापूर्ण उपकरण/प्रणालियों के इष्टतमीकरण और ऊर्जा दक्ष विनिर्माण को बढ़ावा देना।
- एमएसएमई को गुणवत्तापूर्ण उत्पाद बनाने में सक्षम बनाना।
- उत्पादों और प्रक्रियाओं में अपने गुणवत्ता मानकों को लगातार उन्नत करने के लिए एमएसएमई को प्रोत्साहित करना।
- ZED निर्माण और प्रमाणन के क्षेत्र में पेशेवरों का विकास करना।
- मेक इन इंडिया अभियान का समर्थन करना।

[Swadeep Kumar](#)